बदलेंगे धारणा 20 मार्च को बुद्ध सर्किट पर होगा रेस का आयोजन

पहली बार रेस में उतरेंगे 12 भारतीय ड्राइवर

नई दिल्ली, (राजेन्द्र सजवान): आमतौर पर ट्रक ड्राइवर के बारे में बहुत कुछ बुरा-भला कहा जाता है। उन्हें ट्रैफिक बिगाड़ने का दोषी, सड़क दुर्घटनाओं का गुनहगार और हत्यारा एवं बदमिजाज भी मान लिया गया है।

काफी हद तक उनके बारे में यह धारणा सही भी है लेकिन अब सड़क छाप ट्रक ड्राइवर एक अलग अंदाज में नजर आएंगे। उन्हें सुधारने और ट्रैक पर उतारने के लिए टाटा मोटर्स लिमिटेड ने अनोखी शुरुआत की है। इस अभियान को नया रूप देने के लिए टाटा मोटर्स ने देशभर के ट्रक ड्राइवरों को शिक्षण-प्रशिक्षण द्वारा सुधारने और उनमें से श्रेष्ठ को बुद्ध सर्किट पर उतारने का फैसला किया है। 20 मार्च को दुनिया के श्रेष्ठ ट्रक ड्राइवर्स के बीच रेस का आयोजन किया जाना है। इसी दिन 12 श्रेष्ठ भारतीय ड्राइवर सर्वश्रेष्ठ के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करेंगे। भारत में पहली बार यह प्रयोग अनूठा तो होगा ही साथ ही ट्रक ड्राइवरों को लेकर बनी धारणा भी बदलेगी।

चेन्नई में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में टाटा मोटर्स के उपाध्यक्ष आर. रामकृष्णन ने बताया कि बुद्ध सर्किट पर सीजन एक और दो की है ट्रक रेसिंग का शुल्क क्रमशः 25 एवं 50 हजार

मिलेगा सम्मान

सड़क छाप ड्राइवरों की छवि बदलने की कोशिश होगी पहली बार

लोगों ने उठाया था। इस बार यह आंकड़ा आगे जाएगा। कारण पहली बार भारतीय ट्रक ड्राइवर रेस में उतर रहे हैं। रामकृष्णन ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर ड्राइवरों के आवेदन मांगे गए थे, जिनमें से 149 को चुना गया। तत्पश्चात ट्रेनिंग और श्रेष्ठता के आधार पर 60 और तत्पश्चात 24 को एडवांस ट्रेनिंग दी गई, जिनमें से 12 अंतिम रेस की पात्रता प्राप्त करेंगे।

ड्राइवरों के चयन के लिए उनकी उम्र, शारीरिक दमखम, योग्यता, नियमों की जानकारी और साफ-सुथरे रिकार्ड को मापदंड बनाया गया था। लगभग डेढ़ महीने की ट्रेनिंग के बाद उनमें भारी बदलाव आया है। ज्यादातर सड़क पर चलने और ट्रैक पर दौड़ने के अंतर को बखूबी समझ गए हैं। इस संवाददाता ने संतोष यादव, मलकीत सिंह, वाहिद, सिराज, धिरेन्द्र, आनंद आदि ड्राइवरों से बात कर पाया कि टाटा के प्रयासों से उनका जीवन बदल गया है। उन्हें उम्मीद है कि ट्रक रेसिंग से उनको सम्मान की नजर से देखा जाएगा।